विशेष प्रकाशन सं. 99
ISSN : 0972-2351

पिंजरों में मछली पालन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682 018

रंगीन मछली के आहार का सूत्रीकरण के लिए प्राकृतिक रंजकों का संग्रहण एवं निर्धारण

जी.एच. पायलन, अर्चना सिन्हा एवं एस.डी. सिंह

केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, कोलकाता केन्द्र, पश्चिम बंगाल

सारांश

अलंकारी मछली का व्यवसाय मुख्य रुप से उसके चमकीले रंगो की प्राप्ति पर निर्भर है। मीठे पानी के अलंकारी मछली जो खासकर साफ पानी में पाले जाते है, में अल्प रंजक वाली समस्या देखी जाती है। सामान्यतः रंगीन मछली का आहार संतुलित पोषक तत्व वाली स्वादिष्ट अधुलनशील पानी में स्थिर ही नही होनी चाहिये बल्कि मछली में रंग विकास हेतु रंजक भी होनी चाहिए। इसलिए रंगीन मछलियों के लिए विशिष्ट रंजक आधारित आहार विकास हेतु देशी एवं विदेशी मछलियों के मांसपेशी एवं त्वचा तथा प्राकृतिक आहार स्रोत में विशिष्ट रंजक की मात्रा निर्धारित की गयी। अध्ययन के पश्चात औसत रंजक की मात्रा देशी अलंकारी मछली जैसे वाई लोच, सोफोरी बार्व, रोजी बार्व, कोलिसा फेसिएय्स और चन्दा रंगा में क्रमशः 2.13, 1.60, 2.40, 2.80, 1.70 माक्रोग्राम/ग्राम निर्धारित किया गया। विदेशी अलंकारी मछली में अध्ययन के पश्चात औसत रंजक की मात्रा क्रमशः गोल्ड फिश-1.67, स्वार्ड टेल-2.80, एवं टाइगर बार्व-2.80 माक्रोग्राम/ग्राम निर्धारित किया गया। रंजक मात्रा के अध्ययन के अधीन संपूर्ण प्रजाति के मछलियों की तुलना में सबसे कम रंजक की मात्रा सोफोरी बार्व एवं मोली (श्वेत) में पाया गया तथा अधिकतम मात्रा गप्पी में निर्धारित किया गया। संपूर्ण रंजक की मात्रा गाजर, गुलाब की पंखुड़ी, गेंदा फूल, मक्के का आटा और स्पाइरुलिना में क्रमशः 5200, 8900, 8300, 210 और 2100 मिलीग्राम/ग्राम पाया गया जो रंगीन मछलियों के आहार में प्राकृतिक रंजक स्रोतों के रूप में व्यवहार किया जा सके।